1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण प्रकल्प

वेद परिवार निर्माण अभियान

50 मंत्र – 1 परिवार

वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान में भाग लेने हेतु

9810936570 या 9911140756 पर व्हाट्सएप्प करें

वर्ष 49, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 07 सितम्बर, 2026 से रविवार 13 सितम्बर, 2026

विक्रमी सम्वत् 2083 सृष्टि सम्वत् 1960853127

दयानन्दाब्द : 203 पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नेपाल त्रासदी: आपदा राहत सेवा कार्य समिति पहुंची नेपाल

आर्य समाज द्वारा राहत एवं पुनर्वास कार्य आरम्भ

प्राकृतिक आपदाओं में मानव सेवा आर्य समाज की प्राथमिकता–सुरेंद्र कुमार आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज द्वारा राहत एवं पुनर्वास हेतु

सहयोग की अपील

नेपाल में आई भीषण बाढ़ से अनेक परिवारों के जीवन बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। बड़ी संख्या में लोग भोजन, आवास और अन्य मूलभूत आवश्यक वस्तुओं, सुविधाओं के लिए तत्काल सहायता की प्रतीक्षा में हैं।

आर्य समाज सदैव आपदा और संकट की घड़ी में सेवा के लिए आगे रहने वाली संस्थाओं में रहा है। इसी सेवा, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज नेपाल के संयुक्त तत्वावधान में आर्य समाज की समर्पित टीम नेपाल के प्रभावित क्षेत्रों में सीधे धरातल पर कार्य कर रही है।

यह प्रयास केवल तत्काल राहत तक सीमित नहीं रहेगा। हमारा प्रयास दो चरणों में होगा

1. तत्काल राहत

प्रभावित परिवारों तक भोजन, आवश्यक वस्तुएँ, वस्त्र, दवाइयाँ, घरेलू उपयोग की सामग्री तथा अन्य जरूरी सहायता पहुँचाना।

2. पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण

तत्काल संकट के बाद आर्य समाज द्वारा प्रभावित क्षेत्रों का प्रत्यक्ष जमीनी अध्ययन किया जाएगा, ताकि यह समझा जा सके कि परिवारों को वास्तविक रूप से किन आवश्यकताओं की जरूरत है और उन्हें अपने जीवन को पुन: व्यवस्थित करने एवं आत्मनिर्भर बनने में किस प्रकार सार्थक सहायता दी जा सकती है।

सुरेंद्र कुमार आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा | प्रकाश आर्य, मंत्री | माधव प्रसाद उपाध्याय, प्रधान, आर्य समाज नेपाल | धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा | विनय आर्य, महामन्त्री

आपका सहयोग महत्वपूर्ण है

जो व्यक्ति या संस्था आर्थिक सहयोग देना चाहते हैं, वे निम्न बैंक खाते में अपनी सहायता राशि भेज सकते हैं:

बैंक खाता विवरण

Bank : Punjab National Bank
Payee : DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA
Account No : 0133002100005251
IFS Code : PUNB0013300
Branch : Tropical Building, Connaught Place, Delhi - 110001

अपना सहयोग देने के लिए स्कैन करें

कृपया अपनी सहयोग राशि जमा कराते ही व्हाटसएप नं. 9540040388 श्री आशीष शर्मा जी को स्क्रीन शॉट भेजें अथवा सूचित अवश्य करें, ताकि आपकी सहयोग राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 संपर्क सूत्र- 9354900542, 9810040982, 9727536232

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पुणे पदार्पण एवं ऐतिहासिक प्रवचन श्रृंखला का 151वां स्मृति समारोह संपन्न

महर्षि ने किया मनुष्य की अस्मिता का सम्मान –डॉ. वेदपाल शास्त्री

बहुजनों को वेदज्ञान का अधिकारी बनाया था महर्षि दयानंद ने –प्रकाश आर्य

पुणे प्रवचन आर्यों को पढ़ने व आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे–विनय जी आर्य

मानवजाति के ऊपर महर्षि के अनगिनत उपकारों में पुणे प्रवचनों का प्रमुख स्थान है। मुंबई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना के पश्चात महर्षि दयानंद सरस्वती उस समय के प्रबुद्ध विद्वान न्यायमूर्ति श्री म. गो. रानाडे जी के आग्रह पर डेढ़ सौ वर्ष पूर्व विद्वानों की नगरी पुणे में पधारे थे। लगभग ढाई महीने के अंतराल में स्वामी जी ने वहां पर 53 व्याख्यान दिए, जिसमें ''उपदेश मंजरी (हिन्दी) एवं पुणे प्रवचन (मराठी)'' के रूप में विश्व विख्यात हैं!

इस ऐतिहासिक घटना को 151 वर्ष पूर्ण होने पर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन, पुणे स्थित आर्य समाज पिंपरी के प्रमुख संयोजन व शहर की वारजे मालवाड़ी, नाना पेठ, खड़की, आलंदी, चिंचवड़ इत्यादि आर्य समाजों के सहयोग से 6 सितंबर 2026 को ''महर्षि दयानंद

पुणे प्रवचनों का स्मृति समारोह: मंचस्थ स्वामी ऋतस्पति जी एवं संन्यासी वृंद, सार्वदेशिक सभा के मंत्री सर्वश्री प्रकाश आर्य, विनय आर्य, डॉ.नयन कुमार, आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता, सदस्य एवं उपस्थित आर्य नर-नारी

पुणे पदार्पण एवं पुणे प्रवचन : का 151वां स्मृति समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। आर्य समाज, पिम्परी द्वारा संचालित आर्यविद्या मंदिर के भव्य सभागृह में संपन्न हुए इस समारोह की अध्यक्षता प्रधान श्री सुरेंद्र जी करमचंदानी ने की।

इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ऋतस्पतिजी सरस्वती,

– शेष पृष्ठ 4 पर

देववाणी-संस्कृत

प्रभु की परिचर्या करें

वेद-स्वाध्याय

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

– ऋ० 10।121।2; यजुः० 25।32; अथर्व० 4।2।1

ऋषिः– **हिरण्यगर्भः प्राजापत्यः।।** देवता – **कः।।** छन्दः – **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ– **यः आत्मदाः** = जो आत्मस्वरूप को देनेवाला और **बलदाः** = शक्ति को देने वाला है, **यस्य विश्व उपासते** = सब जिसकी उपासना करते हैं और **यस्य देवाः प्रशिषं उपासते** = देव भी जिसके प्रशासन के आश्रित हैं– जिसकी सर्वोच्च आज्ञा में चलते हैं, **यस्य छाया अमृतम्** = जिसकी शरण या आश्रय पाना अमर होना है और **यस्य मृत्युः** = जिसकी दूरी [जिससे दूर होना ही] मृत्यु है **कस्मै देवाय** = उस 'क' [**सुखस्वरूप**] देव का हम **हविषा विधेम** = आत्मत्याग द्वारा पूजन करते हैं।

विनय– आओ, हम अपना सर्वार्पण करके भी उस सुखस्वरूप देव की पूजा करें जो हमारे आत्मस्वरूप का देनेवाला है। हम अपने-आप-(आत्म)– को ही भूलकर भटक रहे हैं। वह हमें इस अपने- आपको प्राप्त करा देता है। वही हमें बल भी देता है; अपने को खोकर, आत्मशक्तिहीन हुए हम लोगों को वही अपनी करुणा से शक्तिहीन हुए हम लोगों को वही अपनी करुणा से शक्ति भी प्रदान करता जाता है और जब हम उस शक्ति के भण्डार को कुछ अनुभव करने लगते हैं तो हम देखते हैं कि यह सब विश्व उसके आश्रित है, सब प्राणियों को सब-कुछ देनेवाला वही है, सब प्राणी उसी प्रकृष्ट शासन में रहे हैं। जाने या अनजाने सब उसी का आश्रय ग्रहण कर रहे हैं। उसके परिपूर्ण शासन का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। उसके नियम अटल है। संसार में जो बड़ी से बड़ी शक्तियाँ (देव) काम करती दिखाई दे रही हैं, वे सब उसी की आज्ञा का पालन कर रही हैं। उसी की प्रेरणा से प्रेरित पृथिवी, सूर्य, वायु, अग्नि आदि सब देव अपने-अपने महान् कार्य ठीक-ठीक चला रहे हैं। ऋषि देखते हैं कि मृत्यु भी उसी के भय से उसकी आज्ञा में दौड़ता फिर रहा है। अहो! इस मौत से तो यह सम्पूर्ण संसार ही डरता हे। सचमुच इस जगत् में जहाँ सुख-भोग हैं, वहाँ इन्हें क्षणिक बनानेवाला दुःख-सन्ताप भी है और कोई भी ऐसा जन्म पानेवाला नहीं है जो मृत्यु का ग्रास न होता हो। देखो, यह ''राम की चक्की'' संसार में ऐसी चल रही है कि इसमें सब पिसते जा रहे हैं, मरते जा रहे हैं। इस मृत्यु के विकराल कालचक्र को चलानेवाला इसका शासक भी वही है। सब संसार दुःख-पीड़ित और मौत का मारा हुआ पड़ा है। हे मुनष्यो! यदि तुम उसकी इस विकराल भयरुपिणी मृत्युदेवी से घबरा चुके हो तो यह भी आश्चर्य देखो कि जब मनुष्य उस प्रभु की शरण में आ जाता है यही मृत्यु अमृत बन जाती है! उस प्रभु की मंगलमय छाया में कोई सन्ताप नहीं रहता, मृत्यु नहीं रहती! आत्मस्वरूप को देकर वह हमें क्षण में अमर कर देता है। आओ, हम उस आत्मस्वरूप को देनेवाले की शरण में आकर अमर बन जाएँ, उसी से बल की याचना करें जिससे कि हम सदा उसकी छाया में ही सुख से रहने में कृतकार्य हो जाएँ।

-: साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्य समाज और हिंदी रक्षा आंदोलन: वैचारिक चेतना, ऐतिहासिक संघर्ष और बलिदान की अमर गाथा

आर्य समाज का इतिहास एक आंदोलनकारी इतिहास है। इसमें सांस्कृतिक अस्मिता, भाषाई गौरव और राष्ट्रीय चेतना के संरक्षण में हिंदी भाषा रक्षा आंदोलन का अपना प्रमुख स्थान है। किसी भी जीवंत राष्ट्र की आत्मा उसकी भाषा में बसती है। इसीलिए हिन्दी भाषा की रक्षा में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती और उनके अनुयायियों का योगदान स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।आर्य समाज द्वारा संचालित 'हिंदी रक्षा आंदोलन' केवल किसी एक भाषा को बढ़ावा देने का उपक्रम नहीं था, बल्कि यह मानसिक गुलामी और क्षेत्रीय संकीर्णता के खिलाफ लड़ा गया एक महान सांस्कृतिक स्वाधीनता संग्राम था। यह आंदोलन वैचारिक जागृति, सतत संघर्ष और अनगिनत बलिदानों की एक ऐसी ऐतिहासिक गाथा है, जिसने आधुनिक भारत के निर्माण में 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की मजबूत नींव रखी।

आर्य समाज के हिंदी रक्षा आंदोलन की जड़ें महर्षि दयानंद सरस्वती के राष्ट्र-दर्शन में निहित हैं। यद्यपि महर्षि दयानंद की मातृभाषा गुजराती थी और वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे, लेकिन उन्होंने यह भली-भांति समझ लिया था कि देश को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए एक सर्वमान्य राष्ट्रभाषा का होना अनिवार्य है। सन 1872 में कलकत्ता (अब कोलकाता) प्रवास के दौरान बाबू केशवचंद्र सेन की सलाह पर स्वामी जी ने अपने व्याख्यानों और लेखन का माध्यम हिंदी (जिसे वे 'आर्यभाषा' कहते थे) को बनाया।सन 1875 में प्रकाशित उनका कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' हिंदी में लिखा गया। यह उस समय एक क्रांतिकारी कदम था, क्योंकि तत्कालीन बुद्धिजीवी वर्ग या तो अंग्रेजी में लिख रहा था या फिर फारसी मिश्रित उर्दू का वर्चस्व था। महर्षि दयानन्द ने हिंदी को 'स्वदेशी' और 'स्वराज' का मुख्य स्तंभ माना। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि विदेशी भाषा के माध्यम से कोई भी राष्ट्र अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उनके इस वैचारिक अधिष्ठान ने आर्य समाज के अनुयायियों में अपनी भाषा के प्रति एक आत्मगौरव का भाव जगाया, जो आगे चलकर एक व्यापक जन-आंदोलन में बदल गया।

आर्य समाज का हिंदी रक्षा आंदोलन बहुआयामी था। इसने तत्कालीन ब्रिटिश भारत में प्रशासनिक, शैक्षिक और सामाजिक स्तर पर कई मोर्चों पर एक साथ लड़ाई लड़ी गई।19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश), बिहार और पंजाब के न्यायालयों तथा सरकारी कार्यालयों में फारसी लिपि और उर्दू का एकछत्र राज था। आम जनता के लिए इस भाषा को समझना अत्यंत कठिन था। आर्य समाज ने इसके विरुद्ध एक व्यापक हस्ताक्षर अभियान चलाया। महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से सन 1882 में 'हंटर कमीशन' (शिक्षा आयोग) के समक्ष हिंदी के पक्ष में गवाही देने के लिए देशव्यापी अभियान चलाया गया। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने लाखों लोगों के हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन सौंपे, जिसके परिणामस्वरूप न्यायालयों और स्कूलों में हिंदी को स्थान मिलना शुरू हुआ।

ब्रिटिश सरकार मैकाले की शिक्षा पद्धति के माध्यम से भारत में एक ऐसा वर्ग तैयार कर रही थी जो रंग-रूप से भारतीय हो, लेकिन सोच से अंग्रेज। इस सांस्कृतिक आक्रमण को विफल करने के लिए आर्य समाज ने दो महान शैक्षिक प्रणालियों को जन्म दिया, डी.ए.वी. (दयानंद एंग्लो-वैदिक) आंदोलन: महात्मा हंसराज, गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला लाजपत राय के नेतृत्व में शुरू हुए इस आंदोलन ने आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ हिंदी और संस्कृत शिक्षा को अनिवार्य बनाया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज (महात्मा मुंशीराम) ने सन 1902 में गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) की स्थापना की। इसके बाद अनेक गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय स्थापित होते गए। यहाँ विज्ञान और उच्च शिक्षा के समस्त विषयों की पढ़ाई का माध्यम पूर्णत: हिंदी को बनाया गया। यह उस दौर में एक साहसिक और अभूतपूर्व प्रयोग था, जिसने सिद्ध किया कि हिंदी उच्च तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा देने में पूरी तरह सक्षम है।

विभाजन से पूर्व के पंजाब में भाषाई राजनीति अत्यंत जटिल थी। वहाँ हिंदी को हाशिए पर धकेलने का संगठित प्रयास किया जा रहा था। आर्य समाज ने पंजाब के घर-घर में हिंदी और देवनागरी लिपि का प्रचार किया। आर्य समाजी समाचार पत्रों जैसे 'सद्धर्म प्रचारक', 'मिलाप' और 'प्रताप' ने हिंदी पत्रकारिता को एक नई धार दी और भाषाई चेतना को जगाए रखा।

स्वाधीनता के बाद, जब पंजाब में क्षेत्रीय राजनीति और 'सच्चर फॉर्मूले' के तहत हिंदी भाषियों पर जबरन एक विशिष्ट प्रादेशिक भाषा थोपने का प्रयास किया गया, तो आर्य समाज ने इसके विरोध में सन 1957 में एक ऐतिहासिक 'हिंदी रक्षा आंदोलन' का शंखनाद किया।यह आंदोलन स्वतंत्र भारत का सबसे बड़ा भाषाई सत्याग्रह था। 'आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा' और 'पंजाब प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा' के संयुक्त तत्वावधान में शुरू हुए इस आंदोलन का नेतृत्व स्वामी आत्मानंद सरस्वती, महाशय कृष्ण, और आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद जैसे दिग्गजों ने किया। इसमें हजारों की संख्या में आर्य समाजी, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं, बुजुर्ग और युवा छात्र शामिल थे, सड़कों पर उतर आए।

– शेष पृष्ठ 7 पर

अमर वीर बलिदानियों को शत्-शत् नमन

महर्षि दयानंद से लेकर 1957 के सत्याग्रहियों तक, इस आंदोलन का एक ही ध्येय था ''अपनी भाषा पर गर्व करना सीखो।'' आज जब हम 21वीं सदी के वैश्विक परिदृश्य में खड़े हैं, जहाँ अंग्रेजी का वर्चस्व और औपनिवेशिक मानसिकता फिर से हावी होने का प्रयास कर रही है, तब आर्य समाज के इस ऐतिहासिक संघर्ष और बलिदान की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। आज की युवा पीढ़ी को यह समझने की आवश्यकता है कि वर्तमान में हमें जो हिंदी का समृद्ध स्वरूप और राष्ट्रभाषा/राजभाषा का गौरव प्राप्त है, वह नि:शुल्क नहीं मिला है। इसके पीछे आर्य समाज के संन्यासियों का तप, बुद्धिजीवियों का संघर्ष और सुमेर सिंह जैसे 20 से अधिक सत्याग्रहियों के रक्त की बूंदें शामिल है। इसलिए हम अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी का सम्मान करें, उसकी वैज्ञानिकता को समझें और उसे केवल भावुकता की भाषा न बनाकर विज्ञान, तकनीक, न्याय और वाणिज्य की भाषा बनाने का संकल्प लें। यही उन महान बलिदानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने हिंदी की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
07 सितम्बर, 2026
से
13 सितम्बर, 2026

शिक्षक दिवस एवं स्मृति दिवस पर विशेष

व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द जी के 158वें स्मृति दिवस पर शत शत नमन

गुरु शिष्य परंपरा के आदर्श महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं गुरु विरजानन्द दंडी

भारत गुरु ज्ञानियों का देश है। समय समय पर हमारे महापुरुषों ने अपने गुरुजनां के चरणों में बैठकर तप, त्याग और समर्पण के साथ शिक्षा प्राप्त करके अपने निजी जीवन, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व धरा को गरिमा प्रदान की है। योग दर्शन में ईश्वर को गुरुओं का भी गुरु बताया है। माता पिता और आचार्य को भी गुरु माना गया है। वस्तुत: गुरु शब्द का अर्थ है अंधेरे से प्रकाश की और अग्रसर करने वाला। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और उनके भाइयों ने महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र जी से वेदादि शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त कर अधर्म, अन्याय, अनीति, अत्याचार को समाप्त किया, योगीराज श्री कृष्ण ने महर्षि संदीपनी के चरणों में बैठकर विद्या अर्जन कर समाज को धर्म की राह पर चलना सिखाया, इस वृहद श्रृंखला में महर्षि दयानंद सरस्वती ने प्रज्ञा चक्षु गुरु विरजानंद के सान्निध्य में शिक्षा प्राप्त कर भारत में छाए हुए अज्ञान, अविद्या के अंधेरे को तिरोहित किया और दोनों आदर्श गुरु शिष्यों के सम्मिलन से आर्य समाज जैसी महान संस्था का उदय हुआ, जिसने लगभग 150 वर्षों के इतिहास में भारत देश की आजादी से लेकर, जात पात, ऊंच नीच के भेदभाव से भारत को मुक्ति दिलाने का ऐतिहासिक कार्य किया, नारी शिक्षा का प्रारंभ, बालविवाह पर प्रतिबंध और विधवाओं को विवाह करने का अधिकार दिलाया, समाज में फैले ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास को दूर हटाकर वैदिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा आर्य समाज की ही देन है। यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना की आदर्श परंपरा को पुन: स्थापित करने वाले आर्य समाज की इन समस्त उपलब्धियों का श्रेय जहां इसके संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी को समर्पित है, वहीं उनके गुरु प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरंजानंद जी का तपोबल भी स्तुत्य है। महर्षि की प्रेरणा से शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, महाविद्यालय , विश्व विद्यालय, डीएवी शिक्षण संस्थान और अनेक अन्य शिक्षण केंद्र स्थापित कर नए आदर्श मानक सिद्ध किए हैं।

गुरु से शिष्य की भेंट:-सन् 1860 ईस्वी में 35 वर्ष की अवस्था में महर्षि दयानंद सरस्वती स्वामी विरजानंद जी की तपस्थली मथुरा पहुंचे। इससे पूर्व 21 वर्ष की युवा अवस्था में आपने प्रेम प्यार और सुख सुविधाओं से सुसंपन्न घर का त्याग किया था। इस बीच के 15 वर्ष के काल खंड में महर्षि नगर नगर, जंगल, जंगल, पर्वत, पर्वत आदि अनेकानेक स्थानों पर सच्चे शिव और कल्याणकारी गुरु की तलाश में भ्रमण करते रहे। जब वे गुरु विरजानंद दंडी जी के द्वार पर पहुंचे और उनकी कुटिया की कुंडी खटखटाई तब गुरु ने पूछा कौन हो? महर्षि दयानंद ने उत्तर में कहा कि यही तो जानने आया हूं कि मैं कौन हूं? यह स्वामी विरजानंद के प्रश्न का उत्तर तो नहीं था, बल्कि गुरु के प्रश्न पर शिष्य के प्रश्न का प्रहार ही था। किंतु गुरु ने तो सरल प्रश्न ही किया था, इस पर इतना कठिन प्रश्न करने वाला कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं होगा? गुरु विरजानंद जी समझ गये थे कि यह शिष्य असाधारण और महान जिज्ञासु है, गुरु विरजानंद जी का अंत:करण भी शायद प्रफुल्लित हो गया होगा क्योंकि वे भी एक योग्य शिष्य की खोज में रहे होंगें, क्योंकि गुरु चाहे कितना भी बड़ा ज्ञान विज्ञान का सागर क्यों न हो अगर उसे सुपात्र और सुयोग्य शिष्य न मिले तो वह अपनी ज्ञान संपदा की धरोहर किसी को कैसे सौंपें? यहां महान गुरु और महान शिष्य का सम्मिलन हो रहा था, दोनों एक दूसरे की परीक्षा ले रहे थे। गुरु समझ गये कि द्वार पर सच्चा सुपात्र शिष्य आया है, गुरु विरजानंद जी ने अपनी कुटिया का द्वार खोल दिया, और इसके साथ ही मानिए कि भारत राष्ट्र के सौभाग्य का द्वार भी खुल गया।

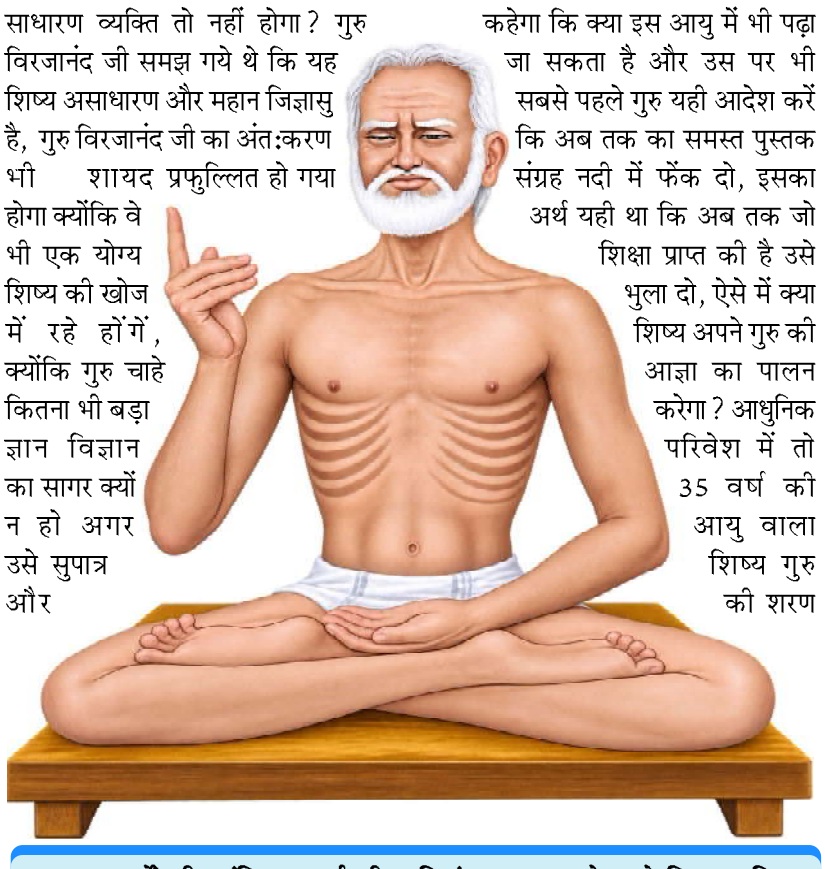

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5 सितंबर 2026 को हमने शिक्षक दिवस मनाया है। आज के समय में स्कूल और कॉलेजों में जो गुरु और शिष्य के आदर्शों की गरिमा समाप्त होती जा रही है। गुरु के नाम पर अध्यापक वर्ग ने शिक्षा का व्यापार शुरू कर दिया है और शिष्य समाज अपने हिसाब से केवल जीविका उपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षा का अर्थ केवल यही नहीं होता कि हम केवल अपने लिए और अपनों के लिए खाना कमाना सीखें, शिक्षा तो व्यक्ति, परिवार, समाज देश और दुनिया में आदर्श स्थापित करने की शक्ति होती है। राष्ट्र और मानव सेवा की भावनाओं का निर्माण ही शिक्षा का सच्चा अभिप्राय तथा अभिन्न अंग है। इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद जी ने जो गुरु शिष्य परंपरा के आदर्श प्रस्तुत किए हैं वे युग युगांतरों तक मानव समाज को सुदिशा प्रदान करते रहेंगे।

गुरु की पहली आज्ञा को महर्षि ने कैसे माना:-महर्षि ने स्वामी विरजानंद जी से शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रार्थना की। स्वामी विरजानंद जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी से संग्रहीत सारी पुस्तकों को यमुना में फेंकने का आदेश दिया, महर्षि ने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए अपनी समस्त पुस्तकों को बिना विचारे यमुना में प्रवाहित कर दिया। अगर इस विषय में विचार किया जाए तो किसी व्यक्ति को 35 वर्ष की अवस्था में गुरु के चरणों में बैठकर पढ़ने के लिए किसी ने आज्ञा नहीं दी थी, उनके भीतर प्रबल जिज्ञासा थी, संकल्प था और तीव्र प्यास थी। नहीं तो इस उम्र में किसी को गुरु चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्ति के लिए कहा जाए तो वह यही कहेगा कि क्या इस आयु में भी पढ़ा जा सकता है और उस पर भी सबसे पहले गुरु यही आदेश करें कि अब तक का समस्त पुस्तक संग्रह नदी में फेंक दो, इसका अर्थ यही था कि अब तक जो शिक्षा प्राप्त की है उसे भुला दो, ऐसे में क्या शिष्य अपने गुरु की आज्ञा का पालन करेगा? आधुनिक परिवेश में तो 35 वर्ष की आयु वाला शिष्य गुरु की शरण में जाने वाला ही नहीं और चला भी गया तो अपनी संचित पुस्तकों को फेंकेगा भी नहीं। लेकिन एक महान गुरु के महान शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी की निष्ठा, विश्वास और संकल्प शक्ति अद्भुत और अनुपम थी। महर्षि ने गुरु विरजानंद जी की आज्ञा को सर्वोपरि माना है और संपूर्ण शिष्य समुदाय को यह प्रेरणा प्रदान की है कि गुणी, ज्ञानी और सदाचारी गुरु को तो मानिए लेकिन गुरु की उचित आज्ञा को भी सर्वोपरि मानिए, तभी शिष्य का उद्देश्य पूरा होता है।

तीन वर्ष की अल्प अवधि में पूर्ण हुई शिक्षा:-सन् 1860 से 1863 तक केवल 3 वर्ष में महर्षि दयानंद ने गुरु विरजानंद जी की शिक्षा ग्रहण की। इन 3 वर्षों में गुरु विरजानंद जी से अष्टाध्याई, महाभाष्य, निरुक्त आदि संपूर्ण व्याकरण की शिक्षा ग्रहण कर ली थी। इससे पता चलता है कि महर्षि की पात्रता, मेधा और शिक्षा प्राप्ति की उत्कट इच्छा कितनी प्रबल थी। स्वामी विरजानंद जी एक बार पाठ पढ़ाने के बाद उसकी पुनरावृत्ति नहीं करते थे, एक दिन पाठ के विस्मृत होने के कारण महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने गुरु विरजानंद जी से पुन: पाठ पढ़ाने का अनुराध किया, इस पर स्वामी विरजानंद जी ने दयानंद जी को डांटते हुए कहा था कि यमुना में डूबकर मर जाओ लेकिन दुबारा पाठ नहीं पढ़ाऊंगा। स्वामी जी यमुना के किनारे ध्यान में बैठकर चिंतन मनन करने लगे और लंबे समय तक ध्यान करने पर उन्हें अपना पाठ स्मरण हो आया, महर्षि गुरु विरजानंद जी के पास आए और कहने लगे कि गुरुवर मुझे आपके द्वारा पढाया गया पाठ स्मरण हो गया है, तभी विरजानंद जी ने पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाया।

इससे ज्ञात होता है कि शिष्य को सावधान होकर पढ़ना चाहिए और गुरु को पूरा सम्मान देना चाहिए, तभी शिक्षा फलीभूत होती है। आधुनिक परिवेश में तो गुरु और शिष्य वीडियो बना बनाकर पढ़ते पढ़ाते हैं, तब भी उनकी साधना सफल नहीं होती। क्योंकि सावधान होकर पढ़ने से सफलता मिलती है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की गुरुभक्ति, सेवा भावना और समर्पण अपने आपमें बड़ा महान था। महर्षि अपने गुरु के स्नान के लिए यमुना जल लेकर आते थे, उनकी कुटिया की साफ सफाई करना और उनके हर सेवा कार्य को पूरी निष्ठा के साथ करना यह उनका दैनिक कर्तव्य था। जिसे उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ निभाया। एक बार महर्षि दयानंद सरस्वती जी गुरु कुटिया में झाड़ू लगा रहे थे कि तभी स्वामी विरजानंद जी स्नान करके आ गये और उनका पैर कूड़े पर पड़ गया। स्वामी विरजानंद जी को महर्षि दयानंद जी पर इतना क्रोध आया कि उन्होंने महर्षि की डंडे से प्रताड़ना की। इस पर महर्षि दयानंद सरस्वती शांत सहज भाव से गुरु द्वारा दिए गए दंड को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करते रहे और बाद में गुरु चरणों को पकड़ कर कहने लगे की हे गुरुवर, मेरा शरीर तो कठोर है लेकिन आपके हाथ तो कोमल हैं, कही मुझे दंड देते हुए आपके हाथों में चोट तो नहीं लग गई।

आधुनिक परिवेश में देखा जाए तो गुरु ही क्या माता पिता भी बच्चों को, शिष्य को प्रताड़ित करने के अधिकारी नहीं हैं और अगर कोई कर भी देता है तो उसको उसका स्वयं दंड भुगतना पड़ता है। लेकिन महर्षि दयानंद की गुरु चरणों के प्रति श्रद्धा निष्ठा अद्भुत थी और उन्होंने मानव समाज को संदेश दिया कि अगर गुरु से शिक्षा प्राप्त करनी है तो विनम्र होना पड़ेगा, अपने भीतर पात्रता विकसित करनी होगी, तभी तुम सच्चे शिष्य बनकर कल्याण की राह पर आगे बढ़ सकते हो।

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
07 सितम्बर, 2026
से
13 सितम्बर, 2026

नेपाल के बाढ़ प्रभावितों की सहायता हेतु आगे आया- आर्य समाज

आपदा राहत समिति पहुंची नेपाल, आर्य समाज नेपाल के अधिकारियों के साथ की बैठक तथा प्रभावित क्षेत्रों राहत सेवा कार्यों का शुभारंभ

सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित आपदा राहत समिति के अध्यक्ष श्री वाचोनिधि आर्य, श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री दीपक ठक्कर, श्री बिजेन्द्र आर्य, आर्य समाज नेपाल के प्रधान श्री माधव प्रसाद उपाध्याय, मंत्री श्री तारानाथ मैनाली और अन्य अधिकारी बैठक करते हुए तथा पीड़ितों को मच्छरदानी प्रदान करते आर्य कार्यकर्त्ता

आपदा राहत सेवा कार्यों के लिए आर्य समाज 15 हनुमान रोड़ को राहत सामग्री एकत्रीकरण केंद्र बनाया गया है। आप जो सामान बाढ़ प्रभावित लोगों के जीवन के लिए आवश्यक समझते हैं, जैसेः- आटा, दाल, चावल, तेल, चीनी, चायपत्ती, कपड़े, साड़ी, सूट, तिरपाल, लालटेन, सोलर लाइट आदि प्रदान कर सकते हैं।

कृपया अपनी सहयोग राशि जमा कराते ही व्हाटस्एप नं.9540040388 श्री आशीष शर्मा जी को स्क्रीन शॉट भेजें अथवा सूचित अवश्य करें, ताकि आपकी सहयोग राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

बंधुओ, किसी भी प्राकृतिक आपदा में केवल जान और माल का ही नुकसान नहीं होता, बल्कि अचानक आई इन आपदाओं में किसी के सर से माता-पिता का साया छिन जाता है, तो किसी की गोद सूनी हो जाती है, उनके नौनिहाल काल के गाल में समा जाते हैं, किसी का भाई तो किसी की बहन बिछुड़ जाती है। इससे भी आगे किसी का तो हंसता खेलता पूरा का पूरा परिवार ही समाप्त हो जाता है, लेकिन इससे भी अधिक कष्टकारी स्थिति तो यह होती है कि जब किसी के परिजन तो आपदा के शिकार हो ही गए, साधन सुविधाएं भी समाप्त हो गई, अब सबसे बड़ा तो अपनों का वियोग और सामने घना गहरा अंधेरा, बुद्धि कुन्द, सोच समझ भी कुंद , ऐसी बदहवासी में आदमी करे तो क्या करे, जाए तो कहां जाए, खाए तो क्या खाएं, पहनें तो क्या पहनें? उसको तो अपना जीवन ही बोझ लगने लगता है। ऐसे विपरीत समय में आपदा ग्रस्त लोगों को केवल साधन सुविधाओं की ही जरूरत नहीं होती बल्कि सहयोग के साथ सहानुभूति की भी आवश्यकता होती है। ऐसे में बड़ी सावधानी और सूझबूझ के साथ आपदा ग्रस्त लोगों को भी भावनाओं का ध्यान रखना होता है।

नेपाल में अकस्मात आई विनाशकारी बाढ़ ने वहां सबकुछ तबाह कर दिया, आज वहां पर लोगों को केवल अपनों को खोने का गम ही नहीं सता रहा, बल्कि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी एक कठिन चुनौती बन गई है। ऐसी विपरीत स्थिति में हमेशा की तरह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और केंद्रीय आर्य समाज नेपाल के सहयोग से पूरे योजनाबद्ध तरीके से राहत सेवा कार्य आरंभ हो गया है। सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित आपदा राहत समिति 8 सितम्बर को नेपाल पहुंच गई है। पहुंचते ही अधिकारियों ने आर्य समाज नेपाल के साथ 3 घंटे तक मीटिंग कर प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण और सेवाकार्यों की भावी योजनाओं को सुनिश्चित किया। परिणाम स्वरूप 9 सितम्बर 2026 से वहां सेवा कार्यों का शुभारम्भ हो गया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों को बाढ़ प्रभावितों की सेवा सहायता की प्रेरणा देते हुए अपने संदेश में कहा कि प्राकृतिक आपदाओं में मानव सेवा करना आर्य समाज का दायित्व ही नहीं धर्म भी है। आपने विश्व व्यापी आर्य समाज की प्रांतीय सभाओं, आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और दानी महानुभावों को राहत सेवा कार्यों में सहयोगी बनने का आह्वान दिया है। अतः आइए, मानव सेवा के इस आपदा राहत कार्य में दिल खोलकर सहयोग करें और इसके लिए दूसरों को भी अवश्य प्रेरित करें।

नेपाल राहत सेवा कार्य में अपना सहयोग देने हेतु आर्य संदेश के प्रथम पृष्ठ पर दी गई बैंक डिटेल के अनुसार अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें तथा Qr कोड के माध्यम से सहयोग राशि प्रदान करें।

पृष्ठ 1 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पुणे पदार्पण...

स्वामी सूर्यवेशजी, महाराष्ट्र सभा के प्रधान स्वामी विद्यानंदजी, स्वतंत्रता सेनानी आनंदमुनिजी, वैदिक विद्वान डॉ. वेदपाल जी, युवा वेदपचारक आचार्य श्री कर्मवीरजी मेधार्थी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनयजी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई के मंत्री श्री विजयजी गौतम, लंदन में वेदप्रचाररत विद्वान डॉ. रामचंद्र जी शास्त्री आदि प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

डॉ. वेदपाल जी ने अपने वक्तव्य में कहा- महर्षि दयानन्द जी का पुणे में पधारना सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की दृष्टि से एक ऐतिहासिक क्रांतिकारी घटना है। हजारों वर्षों से शिक्षा-दीक्षा एवं वेदज्ञान से वंचित दलित, बहुजन जाति को स्वामीजी ने वेदज्ञान देकर उन पर बहुत बड़ा उपकार किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश जी आर्य ने अपने भाषण में कहा-महर्षि दयानंद दूर दृष्टि रखनेवाले महान समाज सुधारक थे। पुणे में आकर उन्होंने सनातनी विद्वानों को चुनौती दी। संस्कृतविद्या के पंडितों को उन्होंने बडे साहस के साथ ललकारा। वेद ज्ञान से विमुख हुए सामान्य लोगों के लिए वैदिक ज्ञान के द्वार महर्षि ने खोले थे। महर्षि के पुणे प्रवचनों के समापन पर शहर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, महात्मा फुले जैसे महापुरुष भी स्वामी जी के इस जुलूस में पैदल चल रहे थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय जी आर्य ने कहा-पुणे में दिए गए स्वामी जी के प्रवचन हम सबको स्वाध्याय के लिए प्रेरणा देते रहेंगे। स्वामी जी ने इस नगरी में प्रबुद्ध समाज के सामने ऐसे मुद्दों को उठाया, जो अभी तक किसी ने नहीं उठाये थे। विद्वानों की विद्वत्ता सीमित थी। महर्षि ने इस विद्यानिधि की कुंजी को सामान्य लोगों के हाथों में देकर जो उपकार किया वह युगों युगों तक स्मरण किया जाता रहेगा। श्री कर्मवीर जी मेधार्थी ने कहा-महर्षि के पुणे प्रवचनों से वैदिक विचारों में अधिक दृढ़ता आ जाती है। इनसे हमें सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी। इस अवसर पर स्वामी ऋतस्पति जी एवं डॉ. रामचंद्र शास्त्री ने भी मार्गदर्शन किया!

समारोह की शरुआत दीपप्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात आर्य कन्या विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत तथा आर्य भजनोपदेशक पं. उदयवीर जी आर्य ने भजन प्रस्तुत किये। मान्यवरों के सम्मान के पश्चात जिस भिड़े बाड़े में स्वामीजी के 15 प्रवचन हुए थे, उसके मालिक श्री बालकृष्ण जी भिड़े की वंशजा प्रपौत्री श्रीमती छाया बर्वे एवं पुणे छावनी परिसर में स्वामी जी के 35 व्याख्यानों का आयोजन करने वाले गंगारामभाऊ म्हस्के के वंशज प्रपौत्र श्री राजेंद्र म्हस्के जी का भी इस अवसर पर सम्मान किया गया। साथ ही महर्षि की पुणे यात्रा के संशोधक प्रो.श्री साईनाथ जी पुन्ने, अनुवादक श्री चारुदत्त उपासनी व उनकी कन्या गीता उपासनी, तथा किल्ले धारूर आर्य समाज के प्रधान श्री प्रमोद कुमार जी तिवारी जी का भी सम्मान किया।

समारोह की प्रस्तावना डॉ. नयनकुमार आचार्य ने रखी। मंचसंचालन श्रीमती नलिनी देशपांडे एवं सुश्री दीप्ति विद्यार्थी ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव प्रा. साईनाथ पुन्ने ने किया। समारोह में महर्षि द्वारा भिडे वाड़ा में दिए गए दिए 15 प्रवचनों के द्वितीय संस्करण पुणे प्रवचन (मराठी) ग्रंथ का तथा लातूर समाचार विशेषांक का विमोचन मान्यवरों के करकमलों से किया। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित इस ग्रंथ का संपादन डॉ.नयन कुमार आचार्य ने किया है।

प्रातः श्री राजेंद्र जी एवं सौ. सुनीता म्हस्के के सहयोग व यजमानत्व में श्रीराम मंदिर में यज्ञ संपन्न हुआ। इस अवसर पर पं. विवेक जी शास्त्री, अविनाश आचार्य,पं. विश्वनाथ शास्त्री, ऋषिपाल शास्त्री इन पंडितों ने यज्ञ का संचालन किया। तत्पश्चात् जिस मार्ग को 151 वर्ष पूर्व ऋषिवर दयानंद के पावन चरणों ने स्पर्श किया था , उसी (म्हस्के वाड़ा से भिडेवाड़ा तक) मार्ग पर भव्य जुलूस निकाला गया। इसमें आर्य नर-नारी बड़े हर्ष व उत्साह के जयघोष देते एवं ऋषि के गीत गा रहे थे। अंत में भिडेवाड़ा के पास पहुंचकर जुलूस का समापन हुआ। समारोह की सफलता में आर्य समाज पिंपरी के प्रधान श्री सुरेंद्र जी करमचंदानी, मंत्री श्री हरेश जी तिलोकचंदानी , कोषाध्यक्ष जयराम जी धरमदासानी, श्री संजय वासवानी जी, कमलेश जी, पं. विवेकज शास्त्री,दिनेश यादव जी, उत्तम राव दंडीमे जी,दिगंबर रिद्दीवाडे जी, संजीव जी भाट, श्री अतुल जी आर्य, श्री हर्ष आर्य, पं.हेमदेव थापर, हर्ष बोंडले, विकास माने, हर्ष अग्रवाल, इंद्रवेशआर्य, इनके साथ ही पुणे शहर के सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी और महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री लखमसी वेलानी, मंत्री अर्जुनराव सोमवंशी, कोषाध्यक्ष श्री रंगनाथ तिवार जी आदियों ने अत्यधिक प्रयास किये।●

नील फाउंडेशन की सहायता से दिल्ली की जय-जय कालोनियों में ''सहयोग'' द्वारा वस्त्र वितरण कार्यक्रम संपन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में नील फाउंडेशन की सहायता से ''सहयोग'' द्वारा अभावग्रस्त जय जय कालोनियों में लगातार वस्त्र वितरण किया जा रहा है। 21वीं सदी के भारत में आज भी बहुत से ऐसे निर्धन लोग हैं, जिन्हें मूलभूत आवश्यकताओं के लिए अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज की कल्याणकारी सेवा योजना ''सहयोग'' द्वारा वस्त्र, जूते, चप्पल, बच्चों के पढ़ने लिखने के लिए स्टेशनरी, खेलने के लिए खिलौने आदि की मूलभूत जरूरतों की पूर्ति की जा रही है। इसके लिए सहयोग द्वारा पहले वस्त्र आदि सामानों का एकत्रीकरण किया जाता है, जो सामर्थ्यवान लोग हैं, जिनके पास आवश्यकता से अधिक वस्त्र आदि सामान है, उनके यहां रखने तक स्थान नहीं है, उनसे पहनने लायक वस्त्र आदि एकत्र करके, साफ, स्वच्छ करके, कपड़ों को प्रेस करके, पैक करके गरीब निर्धन लोगों में वितरित करने का कार्य निरंतर किया जा रहा है। अपने आप में ''सहयोग'' योजना बहुत सफल सिद्ध हो रही है और लगातार लोकप्रिय भी होती जा रही है। इसके माध्यम से लोग आर्य समाज से जुड़ रहे हैं, दुर्गुण, दुर्व्यसनों से बच रहे है।

6 सितम्बर 2026 को ''सहयोग'' द्वारा जय-जय कालोनी शिव विहार और इंद्रा कैंम्प में वस्त्र वितरण कार्यक्रम अत्यंत उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर हर आयु वर्ग के लोगों को मौसम के अनुरूप वस्त्र आदि प्रदान किए गए। आजकल बरसात के बाद उमस और मच्छरों के कारण इन कालोनियों में लोग अधिक बीमार हो रहे है। इसलिए बच्चों, बुजुर्गो और स्त्री पुरुषों के पूरी बाजू के वस्त्र प्रदान किए गए। जिससे उनका मच्छर आदि के काटने से बचाव हो सके। आर्य समाज द्वारा किए गए वस्त्रों को प्राप्त कर सभी लोग प्रसन्न नजर आए और सभी ने आर्य समाज का आभार व्यक्त करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जय-जयकार किया।

आओं, करें सहयोग, शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किये गए वस्त्र आदि ''सहयोग'' के माध्यम से जरूतरमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क करें। *-व्यवस्थापक*

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित की गई ऐतिहासिक पुस्तकों का हुआ विमोचन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई, जिनका विमोचन 2 नवंबर को सम्मेलन के समापन समारोह में किया गया, यहां प्रस्तुत है- पुस्तकों की सूची

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर वाक्य (हिन्दी/अंग्रेजी संस्करण)

- आर्य ध्वज
- भारत का एक ऋषि
- सिख और यज्ञोपवीत
- वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी
- यज्ञ रहस्य
- आर्योद्देश्य रत्नमाला का पद्यानुवाद
- जन्मदिन कैसे मनाएं?
- काला पहाड़
- मोपला
- निराले महापुरुष
- परिवर्तन (मराठी)
- परिवर्तन-2
- संस्कार
- शिखा-चोटी
- यज्ञोपवित
- आर्यसमाज की देवियां
- श्री अरविन्द द्वारा रचित महर्षि दयानन्द
- ऋषि दर्शन
- यज्ञोपवीत या जनेऊ
- शिवलिंग है या ज्योर्तिलग
- महर्षि के जीवन की मुख्य घटनाएं एवं देशाटन
- बलिदान चित्रावली
- संध्या-रहस्य
- आर्यसमाज के सेवा कार्य
- शत-शत नमन
- आर्यवीर दल के झरोखों
- पं. रुचिराम आर्योपदेशक
- सायण और दयानन्द
- गुरु साहिबान
- अमर हुतात्मा
- श्रीमद दयानन्द प्रकाश
- लाला लाजपत राय आत्मकथा
- Dayananda Sarasvati A Poem
- Catalyst Of Change
- Contemplation On Challenges
- Embrace (Gale Lagaiye)
- Original Home Of The Aryans
- Natural Farming
- Superstition
- Whose Story Is This

आर्यजनों से अनुरोध है कि आर्य समाज की इन ऐतिहासिक पुस्तकों को अवश्य पढ़ें और दूसरों को भी प्रेरित करें। पुस्तकें आनलाइन प्राप्त करें:-

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 011-23360150
Website :www.thearyasamaj.org, E-shop:vedicprakashan.com, E-mail :aryasabha@yahoo.com, Mobile : 9540040339, Whatsapp : 9540045898

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है। भारत की आजादी की क्रांति के सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती

गतांक से आगे –

पाठक इसी से कांग्रेस की उस समय की संस्कृति और झुकाव का अंदाजा लगा सकते हैं, फिर कांग्रेस में भाषण हिन्दी में होने लगे और उसमें एक बड़ा परिवर्तन भी दिखने लगा।

कुल मिलाकर इस अध्याय में हम यह निष्कर्ष देना चाहेंगे कि अंग्रेजों ने अपनी सत्ता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना करवाई। लंबे समय तक कांग्रेस उन्हीं की बनाई योजना अनुसार चलती गई। जब जनता का दबाव आर्य समाज द्वारा लाई गई जागृति के कारण बढ़ गया तब वह प्रभाव कांग्रेस के मंच पर नजर आने लगा। अंग्रेज नीतिकारों को इसमें अपनी हार नजर आने लगी। जो लोग अंग्रेज सरकार के साथ चलकर कुछ पाने की इच्छा रखते थे, वह नरम दल और जो सीधे भारत को स्वराज्य की ओर ले जाने के इच्छुक थे, उनको गरम दल कहकर नेतृत्व में नहीं आने दिया गया। अंग्रेजों की यह चाल कुछ समय तक कामयाब हो गई, पर जनता में जागृति इतनी अधिक आ चुकी थी कि लंबे समय तक कांग्रेस पूर्ण स्वराज्य की मांग उठाए बिना नहीं रह सकी, क्योंकि वह जान चुकी थी अगर अब इस मांग को कांग्रेस के मंच से नहीं उठाया गया तो कांग्रेस का जनाधार बिल्कुल समाप्त हो जाएगा।

महात्मा गांधी और कांग्रेस समाज में सुधार के कार्यों को आरम्भ करना जरूरी समझने लगी, पर दयानन्द की सेना तो यह कार्य 50 वर्षो से कर रही थी। 9 जनवरी, 1915 को महात्मा गांधी के भारत आने के बाद उन्होंने आर्य समाज द्वारा शुरू किए गए सामाजिक सुधारों को कांग्रेस की कार्य पद्धति का भाग बनाने पर जोर दिया। स्वदेशी आन्दोलन, छुआछूत, जाति प्रथा, जाति भेद, ऊंच-नीच की खाई को समाप्त करने के लिए जोर दिए जाने लगे। कांग्रेस में संकल्प पारित करवाए जाने लगे, यह एक बड़ा परिवर्तन कांग्रेस में आया, जिसका पूर्ण लाभ कांग्रेस को मिला। आर्यसमाजी, कांग्रेसी कहलाने लगे और कांग्रेस का जनाधार निरंतर बढ़ता चला गया।

महर्षि दयानन्द के एक कर्मठ शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा जी लंदन चले गए और वहां उन्होंने इंडिया हाउस की स्थापना की, जो आगे चलकर सरकार विरोधी गतिविधियों का मजबूत केंद्र बन गया। अनेक क्रांतिकारियों के छिपने, रहने और गतिविधियों की योजना बनाने का केंद्र बन गया।

क्रांतिकारी बलिदानियों की लंबी सूची में 80: से अधिक नाम उन महान् व्यक्तियों के हैं जो आर्य समाज, सत्यार्थ प्रकाश, गुरुकुल या डीएवी से जुड़े रहे, उनमें से कुछ प्रमुख ज्ञात-अज्ञात निम्न प्रकार हैं-

1. अमर स्वामी श्रद्धानन्द, 2. भाई परमानन्द, 3. श्यामजी कृष्ण वर्मा, 4. लाला लाजपत राय, 5. विनायक दामोदर सावरकर, 6. रामप्रसाद बिस्मिल, 7. ठाकुर रोशन सिंह, 8. राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी 9. भगत सिंह, 10. राजगुरु, 11. सुखदेव, 12. मदनलाल ढींगरा, 13. राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, 14. बटुकेश्वर दत्त, 15. स्वामी सोमदेव, 16. गणेश शंकर विद्यार्थी,17. जयचन्द विद्यालंकार, 18. पंडित जगत राम आर्य,19. मास्टर अमीरचंद, 20. विष्णु गणेश पिंगले, 21. करतार सिंह सराभा, 22. नीरा आर्य, 23. सरदार अजीत सिंह (भगतसिंह के चाचा), 24. बलराज भल्ला (महात्मा हंसराज के पुत्र), 25. हरिश्चंद्र (स्वामी श्रद्धानंद के पुत्र), 26. प्रेमनाथ सहगल, 27. रफ्तार सिंह, 28. भगवती चरण बोहरा, 29. कैप्टन लक्ष्मी लहगल, 30. दुर्गा भाभी, 31. सूफी अंबा प्रसाद, 32. मानवती आर्य, 33. सोहन लाल पाइक, 34. ठाकुर जोरावर सिंह, 35. वसन्त कुमार, 36. शिव वर्मा, 37. यशपाल, 38. जयदेव कपूर, 39. रणबीर सिंह हुड्डा, 40. भाई बालमुकुन्द, 41. भाई परमानन्द, 42. धर्मवीर पं. लेखराम, 43. पं. तुलसीराम, 44. रामचन्द्र, 45. भीमराव पाटिल, 46. बालिया हनुमंत, 47. राधा कृष्ण मोदानी, 48. श्रीमहादेव, 49. सत्यनारायण मुदध वेली (आर्य), 50. शंकरराव स्वर्णकार, 51. माणिकराव पाटिल नवाडे, 52. अर्जुन सिंह, 53. हीराबाई पाटिल, 54. परमानंद, 55. धर्म प्रकाश, 56. किशन सिंह राजपूत, 57. भीमराव पाटिल, 58. सुनहरा सिंह, 59. शंकरराव स्वर्णकार, 60. माधवराव पाठक, 61. रामा मांग आर्य (दलित), 62. विष्णु भगवंत, 63. चौधरी ताराचंद, 64. नागोराव चौधरी, 65. सदाशिवराव पाठक, 66. जयराम सोनी, 67. पाण्डुरंग जी, 68. महादेव निवाडेकर, 69. व्यंकटराव कंधरकर, 70. गोविन्द राव नलगीर, 71. महादेव, 72. सत्यनप्पा मुदप्पा तेली, 73. वीर बालिया हनुमंत,

– *क्रमशः*

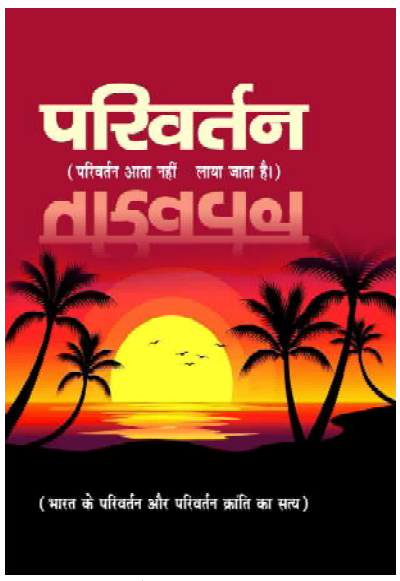

पुस्तक घर बैठे/ऑनल,इन प्रा,प्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

Continue From Last Issue

WHAT CAN I EAT?

Research shows that reducing meat consumption can increase your lifespan by 3.6 years. The same report has shown that the group of people consuming plant-based diet was also more likely to live beyond the age of 70.

Studies show that the habit of consuming vegetarian food items i.e. food items obtained from plants helps in easily getting the nutrients required by the body, as well as it also reduces the risk of problems like cholesterol and blood sugar.

Nutritionists say that consuming vegetarian diet is also helpful in controlling blood sugar, keeping heart health better and reducing weight. Vegetarian or non-vegetarian diet, which type of things are considered more beneficial in keeping the body healthy, has been a topic of discussion for a long time. In the conclusion of many studies, researchers found that vegetarian food has less calories, saturated fat and cholesterol levels compared to other eating patterns. Apart from this, this type of diet also contains more fiber, potassium and vitamin-C. Vegetarians weigh less than meat eaters, due to which they also have less risk of serious diseases like cancer. In such a situation, vegetarian diet is considered healthier.

Solution

- From today itself, teach your children one thing that we are humans and as such we have the greatest responsibility in nature. Before eating anything, listen to the voice of your soul.
- Stop eating non-veg or gradually reduce its consumption.
- Limit fast food as well, it has the effect of a deadly toxin. Things like pizza, burger, pastry, chocolate and cake not only harm the health of the child but also affect physical and mental development. The immunity of such children also becomes very weak, due to which the risk of infection and allergy in children increases a lot.
- Inculcate the habit of eating ready-made food made on Indian basis from childhood. For the proper development of the child, some pure vegetarian dishes must be included in the diet. Raise children with vegetarian food with milk and curd. Keep in mind that the food the children eat today will be the future of the family, society and nation tomorrow.
- Make it a topic of discussion, discuss in the family, debate in schools, change your own eating habits.
- My body is meant to live for 100 years, no less than that and I want to live those 100 years in full health and not by depending on anyone. Come, let us make our food pure vegetarian without hurting anyone.
- Similarly, Nobel Prize winner in literature George Bernard Shaw says, we meat eaters are those walking graves in which the bodies of slaughtered animals are buried, who have been killed for our taste and liking.

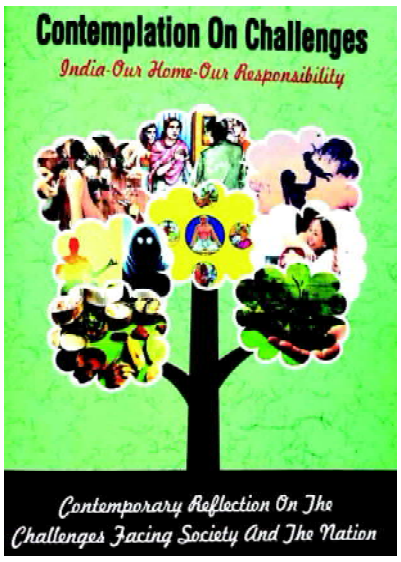

- Do read the book Gokarunanidhi written by Maharshi Dayanand Saraswati ji
- Hope you will not become a partner in the sin of killing someone for your own taste.

To be Continue....

With courtesy by the biography of "CONTEMPLATION OF CHALLENGES" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Vinay Arya
To buy online login
www.vedicprakashan.com
Contact - 9540040339

पवित्र एवं शुद्ध वैदिक ज्ञान से चेतना का उदय

पवित्रता और ज्ञान का अटूट संबंध है। अक्सर कहा जाता है कि 'मन जीतै जगु जीतू', लेकिन मन को जीतने और बुद्धि को समृद्ध करने की बुनियादी शर्त 'पवित्रता' है। यह पवित्रता केवल शारीरिक या बाह्य स्वच्छता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय चेतना की सर्वोच्च अवस्था है जो हमारी सोच को पवित्रता और जीवन को एक नई सार्थक दिशा देती है। इसका आधार वैदिक ज्ञान है।

पवित्रता एक बहुत व्यापक और गहरी अवधारणा है, जिसका वास्तविक अर्थ मन, वचन और कर्म की एकता है। जब व्यक्ति के भीतर का द्वंद्व और मानसिक विकार समाप्त हो जाते हैं तो उसकी मानसिक ऊर्जा बिखरने की बजाय केंद्रित होने लगती है। लालच, ईर्ष्या और क्रोध जैसे विकार बुद्धि पर छाए कोहरे की तरह हैं जो सत्य को देखने की शक्ति को अस्पष्ट कर देते हैं। जिस प्रकार गंदे शीशे से बाहर का दृश्य स्पष्ट नहीं दिखता, उसी प्रकार अशुद्धता से भरा मन सही निर्णय लेने की क्षमता खो देता है। पवित्रता इस कोहरे को चीरती है और बुद्धि को 'स्पष्ट और स्पष्ट दृष्टि' प्रदान करती है।

बुद्धि को मनुष्य की 'तीसरी आँख' कहा गया है-दिव्य दृष्टि जो भौतिक आँख की सीमाओं से परे अदृश्य सत्य को देखने की क्षमता रखती है। लेकिन इस आंख की रोशनी पवित्रता के तेल से ही चमकती है। जब मनुष्य का अन्त:करण शुद्ध होता है तो उसकी बुद्धि में 'विवेक' उत्पन्न होता है। विवेक का वास्तविक अर्थ सत्य और असत्य तथा शाश्वत और अविनाशी (सनातन और शाश्वत) के बीच अंतर करने की शक्ति है। पवित्र बुद्धि की आंखों पर पड़ी माया की धूल को झाड़ देती है, जिससे मनुष्य संसार के जंजाल में न फंसकर हर स्थिति को उसके वास्तविक रूप में देख पाता है।

हम अक्सर नवाचार को केवल नई तकनीक तक ही सीमित रखते हैं, लेकिन वास्तव में नवाचार का सार 'ताजगी' में निहित है। पवित्रता मानव मन से उस मानसिक बासीपन को दूर कर देती है जो पुरानी कटुता और पूर्वाग्रहों के बोझ तले दबा हुआ है। शुद्ध बुद्धि हर पल को एक नई शुरुआत के रूप में देखती है। जब बुद्धि पूर्वाग्रह के बंधनों से मुक्त हो जाती है, तो वह हर जटिल समस्या का मौलिक और रचनात्मक समाधान खोजने में सक्षम हो जाती है। इसी कारण पवित्रता को 'नवीनता का जन्म' माना गया है।

पवित्रता और एकाग्रता का सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ है। अशद्ध या नकारात्मक विचार मन को लगातार विचलित करते रहते हैं। जब मनुष्य पवित्रता का मार्ग अपनाता है तो उसके विचार स्थिर हो जाते हैं। शुद्ध एवं एकाग्र बुद्धि 'लेजर किरण' के समान शक्तिशाली होती है, जो जटिल से जटिल विषयों को भी काट कर उनके सार तक पहुँच जाती है। यह एकाग्रता व्यक्ति को बौद्धिक उत्कृष्टता और वास्तविक सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाती है।

नैतिक दृष्टि से शुद्ध चेतना वाले व्यक्ति की बुद्धि सदैव न्याय, सत्य और लोकहित की संरक्षक होती है। उसकी सोच संकीर्ण स्वार्थों से टूटकर लौकिक सरोकारों से जुड़ती है, जिसके कारण वह 'सबकी भलाई' तलाशने और उसके लिए अपना जीवन न्यौछावर करने में सक्षम हो पाता है। पवित्रता मनुष्य को 'निर्भयता' का वरदान देती है। जब मन में कोई पाप या त्रुटि नहीं होती तो बुद्धि पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी क्षमता प्रदर्शित करती है।

पवित्र बुद्धि की सबसे बड़ी विशेषता उसकी 'नि:स्वार्थता' है। पवित्रता ज्ञान को विनम्रता और सेवा में बदल देती है। शुद्ध चेतना वाला व्यक्ति जानता है कि ज्ञान का वास्तविक उद्देश्य मानवता की सेवा करना है। यही विनम्रता ज्ञान के द्वार सदैव खुले रखती है, जिससे मनुष्य 'सदा शिक्षार्थी' बना रहता है।

यदि हम चाहते हैं कि हमारी बुद्धि तीव्र, शुद्ध और रचनात्मक हो तो हमें पवित्रता को अपने जीवन में एक संस्कार के रूप में अपनाना होगा। पवित्रता कोई बाहरी दिखावा नहीं है, बल्कि यह मानवीय चेतना का 'आंतरिक स्नान' है। पवित्रता परम प्रकाश है, जो हमें अज्ञानता के अंधकार से बाहर निकालती है और सर्वोच्च सत्य के मार्ग पर प्रकाश डालती है।

-डॉ. कृष्णलाल

पृष्ठ 2 का शेष

आर्य समाज और हिंदी रक्षा आंदोलन...

वे 'हिंदी अमर रहे' और 'देवनागरी अमर रहे' के नारे लगाते हुए गिरफ्तारियां दे रहे थे। तत्कालीन राज्य सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लिए लाठीचार्ज, आंसू गैस और जेल की यातनाओं का सहारा लिया। पंजाब की लगभग सभी जेलें (रोहतक, अंबाला, फिरोजपुर, जालंधर) सत्याग्रहियों से ठसाठस भर गईं। स्थिति यह हो गई कि सरकार को सत्याग्रहियों को रखने के लिए अस्थायी जेलें बनानी पड़ीं। इस आंदोलन में लगभग 22,000 से अधिक लोगों ने गिरफ्तारियां दीं थी।

कोई भी बड़ा आंदोलन बिना आत्मोत्सर्ग और बलिदान के सफल नहीं होता। आर्य समाज के इस हिंदी रक्षा आंदोलन ने भी अपने राष्ट्र और भाषा की वेदी पर महान सपूतों की आहुति दी। आंदोलन के प्रणेता स्वामी आत्मानंद ने जेल की अमानवीय परिस्थितियों और सरकारी प्रताड़ना के सामने घुटने नहीं टेके। उन्होंने अनशन और जेल की यातनाओं को सहते हुए अपने प्राण राष्ट्रभाषा के चरणों में समर्पित कर दिए। उनका बलिदान इस आंदोलन का प्रेरक उदाहरण सिद्ध हुआ।रोहतक के युवा आर्य सत्याग्रही सुमेर सिंह जेल में बंद थे। जेल प्रशासन की बर्बरता और क्रूर लाठीचार्ज के कारण वे गंभीर रूप से घायल हो गए और अंतत: उन्होंने दम तोड़ दिया। सुमेर सिंह का बलिदान युवा पीढ़ी के लिए भाषाई गौरव का प्रतीक बन गया। इस आंदोलन में सैकड़ों ऐसे वृद्ध, महिलाएं और बच्चे थे जिन्होंने जेलों में महीनों तक सूखी रोटियां खाईं, अमानवीय व्यवहार सहा, लेकिन 'हिंदी छोड़ो' के पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए। कई सत्याग्रही जेल से निकलने के बाद शारीरिक रूप से अपंग हो गए, परंतु उनका वैचारिक संकल्प अडिग रहा।अंतत:, जन-आक्रोश और आर्य समाज के इस अडिग संकल्प के आगे सरकार को झुकना पड़ा। सरकार को भाषाई नीतियों में संशोधन करना पड़ा और हिंदी भाषियों के अधिकारों को मान्यता देनी पड़ी। इसी आंदोलन की वैचारिक परिणति आगे चलकर पंजाब के पुनर्गठन और हिंदी भाषी राज्य के रूप में हरियाणा के उदय के रूप में भी देखी जा सकती है।

आर्य समाज द्वारा संचालित हिंदी रक्षा आंदोलन महज एक भाषाई हठ नहीं था, बल्कि यह भारत की बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी पहचान के भीतर हिंदी को एक जोड़ने वाली कड़ी (सेतु) के रूप में स्थापित करने का महाअभियान था। महर्षि दयानंद से लेकर 1957 के सत्याग्रहियों तक, इस आंदोलन का एक ही ध्येय था ''अपनी भाषा पर गर्व करना सीखो।'' आज जब हम 21वीं सदी के वैश्विक परिदृश्य में खड़े हैं, जहाँ अंग्रेजी का वर्चस्व और औपनिवेशिक मानसिकता फिर से हावी होने का प्रयास कर रही है, तब आर्य समाज के इस ऐतिहासिक संघर्ष और बलिदान की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। आज की युवा पीढ़ी को यह समझने की आवश्यकता है कि वर्तमान में हमें जो हिंदी का समृद्ध स्वरूप और राष्ट्रभाषा, राजभाषा का गौरव प्राप्त है, वह नि:शुल्क नहीं मिला है। इसके पीछे आर्य समाज के संन्यासियों का तप, बुद्धिजीवियों का संघर्ष और सुमेर सिंह जैसे 20 से अधिक सत्याग्रहियों के रक्त की बूंदें शामिल हैं। इसलिए हम अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी का सम्मान करें, उसकी वैज्ञानिकता को समझें और उसे केवल भावुकता की भाषा न बनाकर विज्ञान, तकनीक, न्याय और वाणिज्य की भाषा बनाने का संकल्प लें। यही उन महान बलिदानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने हिंदी की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

-संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द जी ...

शिक्षक दिवस पर गुरु एवं शिष्यों को संदेश:-गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5 सितंबर 2026 को हमने शिक्षक दिवस मनाया है। आज के समय में स्कूल और कॉलेजों में जो गुरु और शिष्य के आदर्शों की गरिमा समाप्त होती जा रही है। गुरु के नाम पर अध्यापक वर्ग ने शिक्षा का व्यापार शुरू कर दिया है और शिष्य समाज अपने हिसाब से केवल जीविका उपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षा का अर्थ केवल यही नहीं होता कि हम केवल अपने लिए और अपनों के लिए खाना कमाना सीखें, शिक्षा तो व्यक्ति, परिवार, समाज देश और दुनिया में आदर्श स्थापित करने की शक्ति होती है। राष्ट्र और मानव सेवा की भावनाओं का निर्माण ही शिक्षा का सच्चा अभिप्राय तथा अभिन्न अंग है। इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद जी ने जो गुरु शिष्य परंपरा के आदर्श प्रस्तुत किए हैं वे युग युगांतरों तक मानव समाज को सुदिशा प्रदान करते रहेंगे।

गुरु दक्षिणा की परंपरा और मानवजाति कल्याण:-हमारी प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में गुरु दक्षिणा की महान परंपरा और अपार गरिमा थी। महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपने गुरु विरजानंद जी से शिक्षा प्राप्त कर जब गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु को प्रिय भेंट लौंग समर्पित करने लगे तब गुरु विरजानंद ने अपने प्रिय शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती को कहा कि मुझे गुरु दक्षिणा देना ही चाहते हो तो जो आज भारत में अज्ञान अविद्या का अंधेरा छाया हुआ है, चारों तरफ ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास का बसेरा है, अगर आप दक्षिणा देना ही चाहते हो तो दीन दुखी मानवजाति की इस पीड़ा को दूर करो, वेदों के ज्ञान से नए सवेरे का उदय करो, मानव समाज में जो भय, भ्रम व्याप्त है, पूरा मानव समाज दु:ख पीड़ा और संतापों से त्रस्त है, सबको जीने की राह दिखाओ। देश और धर्म के लिए अपना पूरा जीवन नौछावर कर दो, महर्षि दयानंद सरस्वती ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए अपना पूरा जीवन वैदिक, धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार और विस्तार के लिए समर्पित कर दिया। स्वयं ने जहर पीकर वे समाज को अमृत पिला गये, 14 सितम्बर 1868 को गुरु विरजानन्द जी का निर्वाण हुआ तब उनके महान शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने कहा था कि ''आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है'' गुरु विरजानन्द के 158 वें स्मृति दिवस पर शत शत नमन।

गुरु शिष्य परंपरा के प्रेरक स्तंभ महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद को शत शत नमन:-आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानंद ने एक नये गौरवशाली युग का आरंभ किया। ऐसे गुरु शिष्य की आदर्श परंपरा को शत शत नमन करने का शुभ अवसर ही शिक्षा दिवस है, शिक्षा दिवस पर भारत के विद्यार्थियों को गुरु विरजानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के आदर्श जीवन को पढ़ने का संकल्प लेना चाहिए और अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहिए।

⑧ साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 07 सितम्बर, 2026 से रविवार 13 सितम्बर, 2026
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 10-11-12/09/2026 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 सितम्बर, 2026

आर्य समाज हनुमान रोड द्वारा वेद प्रचार समारोह संपन्न

श्रावणी पर्व के अवसर पर आर्य समाज 15 हनुमान रोड द्वारा 28 अगस्त से 4 सितंबर 2026 तक वेद प्रचार सप्ताह उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। 28 अगस्त को श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबंधन के अवसर पर यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य समाज के अधिकारियों ने नए यज्ञोपवीत धारण किए और श्रावणी के विशेष महत्व पर आधारित कार्यक्रम संपन्न हुआ। 30 अगस्त को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य वीर बलिदानियों को स्मरण करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। 1 से 4 सितम्बर तक प्रात: काल 8:00 बजे से 9:30 बजे तक ब्रह्मा आचार्य इन्द्रदेव जी के निर्देशन में यजुर्वेदीय यज्ञ और सायं काल 6:30 बजे से 8:30 तक वेद प्रवचन, दीपक आर्य जी के मधुर भजन नियमित रूप से हुए, जिसमें आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य, आर्य नर, नारी और बच्चे सम्मिलित रहे। 4 सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त ''आदर्श एवं अनुकरणीय योगिराज श्रीकृष्ण'' विषय पर भाषण प्रतियोगिता में दर्जन भर से अधिक स्कूलों के बच्चों ने सहभागिता की। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को शील्ड, प्रमाण पत्र और प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई तथा सभी प्रतिभागियों को साहित्य और प्रोत्साहन राशि, प्रमाण पत्र प्रदान किया गये। मंच संचालन उपमंत्री, श्री विजय दीक्षित जी ने किया और प्रधान श्री नरेंद्र हुड्डा जी ने उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

-संजय कुमार, मंत्री

प्रतिष्ठा में,

समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माध्यम से शिथिल आर्यसमाजों को गतिशील करने के प्रयास के अन्तर्गत

बच्चों को शिक्षा एवं संस्कार प्रदान करने हेतु बालवाड़ी प्रकल्प का लाभ उठायें आर्यसमाज

शिथिल आर्यसमाजों को पुन: गतिशील करने हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बालवाड़ी केन्द्र संचालित करने का कार्य किया जा रहा है। यदि आप भी अपनी शिथिल आर्यसमाज को गतिशील करना चाहते हैं, तो कृपया अपनी प्रान्तीय सभा के माध्यम से दिल्ली सभा के साथ संयुक्त रूप से बालवाड़ी केन्द्रों का शुभारम्भ करें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9911140756

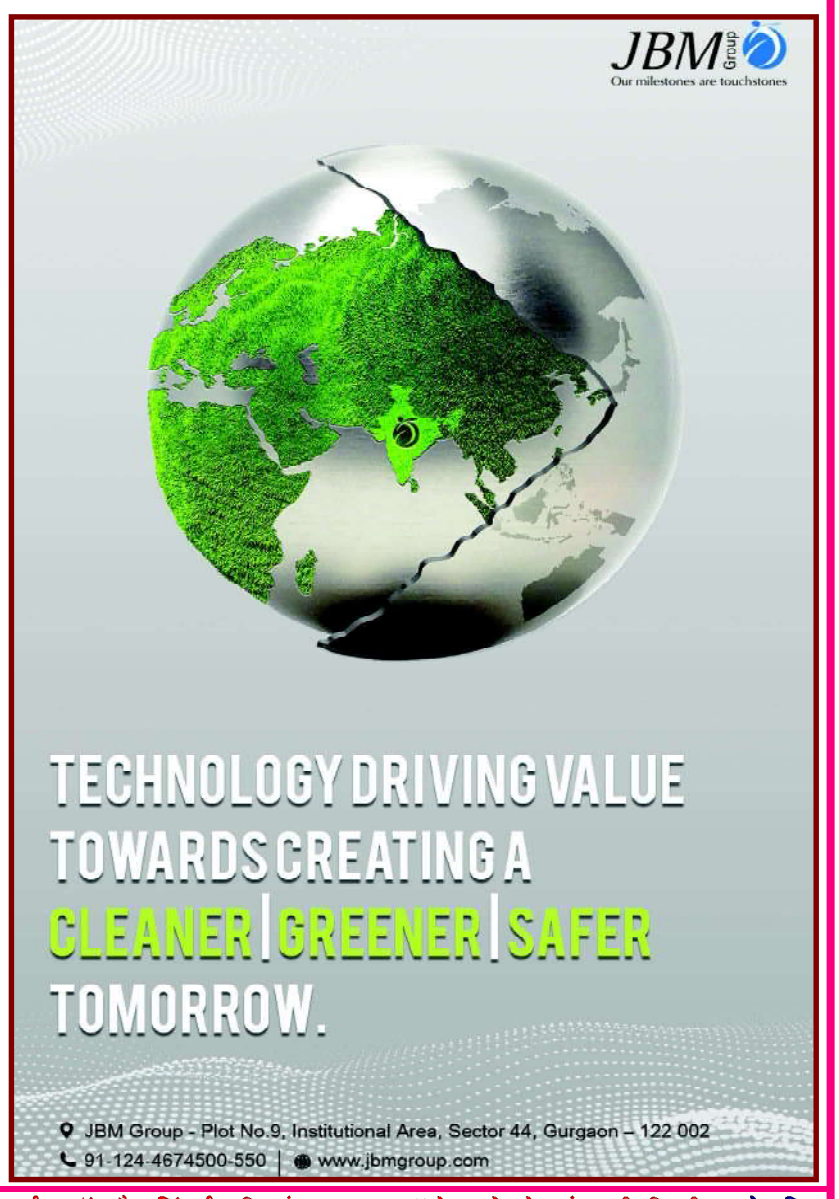

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर